country becoming self-sufficient in this matter?

Shri S. K. Patil: That is also another consideration. But when we talk of a longer period, it is not longer than five years.

Shri Hem Barua: May I know whether it is a fact that another five year agreement between the two countries is being signed and, if so, whether the terms and conditions are the same as are obtaining in the five year agreement that is still under operation? Further, in regard to the purchase of 150,000 tons, may I know whether it is going to be in Indian currency or whether any foreign exchange is involved? At the same time, may I know whether Burma is going to make purchases of commodities from this country in view of this rice deal?

Shri A. M. Thomas: With regard to the second agreement my senior colleague has already answered. It is only under consideration. It is only at the proposal stage. With regard to the incurring of foreign exchange in connection with the supplementary agreement entered into for the import of one lakh odd tons, the idea is that we will not incur any additional foreign exchange. We will take into account the average of imports of Burma from India. If anything is done in addition, it is for that that we purchase rice.

Shri Hem Barua: Is it in Indian currency?

Shri A. M. Thomas: It would be in Indian currency in the sense that we will be paying in our own goods.

बद्रीनाथ सड़क पर विश्राम-गृह

*५५२. **श्री भक्त दर्शन :** क्या परिवहन तथा संचार मंत्री १७ दिसम्बर, १९५८ के अतारांकित प्रश्न संख्या १७७२ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) बद्रीनाथ व केदारनाथ को जाने वाली सड़क पर विश्राम-गृह बनाने के कार्य में इस बीच क्या प्रगति हुई है;

(ख) इस कार्य के लिये अब तक भारत सरकार उत्तर प्रदेश सरकार को कितना अनुदान दे चुकी है ;

(ग) इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अब कितना कार्य शेष है ; और

(घ) उसे पूरा करने के लिये क्या कदम उठाये जा रहे हैं ?

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) से (घ). इस संबंध में सभा पटल पर एक विवरण रख दिया गया है। [**देखिए** परिशिष्ट २, अनुबन्ध संख्या ५१]

श्री भक्त दर्शन : इस विवरण को देखने से पता चलता है कि सन् १९५७–५८ में १ लाख रु० उत्तर प्रदेश सरकार को दिये गये और सन् १९५८–५९ में केवल ३० हजार ५०० रु० ही दिये गये। मैं जानना चाहता हूं कि जिस धीमी चाल से काम हो रहा है उससे क्या दूसरी पंचवर्षीय योजना में यह काम समाप्त हो सकेगा ?

श्री राज बहादुर : इस विवरण में यह संकेत कर दिया गया है कि जिन कामों का हवाला इस विवरण में दिया गया है वह इसी वित्तीय वर्ष में समाप्त हो जायेंगे। जो जो सुझाव वहां से आते हैं या स्कीम्स आती हैं, उनके अनुसार हम रुपया मंजूर करते हैं।

Shrimati Ila Palchoudhuri: It is said in the statement that the cabins have not been built because the workers do not have proper accommodation and food. Will the department of tourism see to it that the workers do have accommodation and food so that these log cabins can be built?

Shri Raj Bahadur: Many of these log cabins are proposed to be situated at places which are snow-bound for a number of months during the year. At those places it is not possible for

us to provide the necessary accommodation at that time, and that is why it has been stated in the statement that certain facilities and amenities necessary for the workers are not possible to be provided there.

सेठ गोविन्द दास : क्या मंत्री जी इस बात को जानते हैं कि उत्तरा खंड की यात्रा में जाने वाले वहां पर चार जगहों को जाते हैं : एक यमनोत्री, दूसरे गंगोत्री, तीसरे बद्रीनाथ और चौथे केदारनाथ, और चारों जगह ठहरने की व्यवस्था इतनी खराब है कि आज के समय में वहां पशु भी नहीं ठहर सकते ? ऐसी हालत में वहां पर जो काली कमली वालों का प्रबन्ध है और जो उनकी धर्मशालाएं हैं, उन धर्मशालाओं को ठीक करने के लिये मैंने एक पत्र भी उत्तर प्रदेश की सरकार को और माननीय मंत्री जी को लिखा था कि वह भी एक पब्लिक ट्रस्ट है, क्या उसको इस तरह का अनुदान दिया जा सकता है ताकि थोड़े से में वह चीजें ठीक हो सकें। क्या इस पर सरकार ने विचार किया है ?

श्री राज बहादुर : अतीत से ही वहां चारों तीर्थ स्थानों के असंख्य यात्रियों द्वारा सेवा होती रही है । वे वहां पहुंचते हैं । लेकिन जो सुझाव माननीय सदस्य ने दिया है कि जो काली कमली वाले बाबा की धर्मशालाएं हैं उन को कोई सहायता दी जाये, ऐसा कोई सुझाव हमारे विभाग के पास आया हो, ऐसा मुझे स्मरण नहीं । अगर आया होगा तो अवश्य उस पर विचार किया जायेगा ।

श्री पद्म देव : चूंकि यह धार्मिक स्थान है जहां प्रायः यात्री लोग जाते हैं, सरकार की तरफ से जो रैस्ट हाउसेज की योजना है वह केवल बड़े लोगों के लिये है या और व्यक्तियों के लिये भी है ? क्या वहां ऐसा कोई प्रबन्ध है कि रात में वे लोग वहां पर ठहर सकें ?

श्री राज बहादुर : यह प्रश्न तो जो चट्टियों या लाग केबिन्स कहलाती हैं उनकी व्यवस्था के सम्बन्ध में उठाया गया था । इन के अतिरिक्त विशेष स्थानों पर कुछ रैस्ट हाउसेज बनाये जाते हैं । मैं समझता हूं कि वह सब के लिये हैं । लेकिन साधारण लोगों के लिये, जो कि रैस्ट हाउसेज में नहीं ठहरते हैं, चट्टियां अर्थात लाग केबिन्स में ठहरने की व्यवस्था है ।

श्रीमती सहोदरा बाई : बद्रीनारायण के रास्ते में या गंगोत्री के रास्ते में सरकार की तरफ से यात्रियों के लिये कोई धर्मशाला बनवाई गई है या नहीं ?

श्री राज बहादुर : यह जो लाग केबिन्स या चट्टियां हैं जिनको बनाने के लिए सहायता दी जा रही है सात स्थानों में बन चुकी है और छः स्थानों में इस वित्तीय वर्ष के अन्त तक बन जायेंगी । यह गवर्नमेंट की ओर से या गवर्नमेंट की ओर से मिली सहायता के द्वारा ही बन रही हैं ।

श्री रघुनाथ सिंह : मैं यह जानना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश की सरकार का इस सहायता में क्या हिस्सा था । साथ ही मैं यह भी जानना चाहता हूं कि पिछले साल से पहले १ लाख रु० उसको दिया गया सेंटर की तरफ से और पिछले साल सिर्फ ३० हजार रुपया उसे दिया गया, यानी कम कर दिया गया, तो इस का कारण क्या है । सरकार इस बात को जानती है कि ३० हजार रु० में एक धर्मशाला भी नहीं तैयार हो सकती ।

श्री राज बहादुर : मैंने अभी निवेदन किया और फिर निवेदन कर दूं कि यह लकड़ी की बनाई जा रही है और लकड़ी की ही बनाई जाती हैं तथा लाग केबिन्स के नाम से बोली जाती हैं जिनका हवाला विवरण में दिया गया है । इसके लिये १लाख ६० सन् १९५७-५८ के लिये दिया गया था और ३० हजार रु० पिछले साल दिया गया था । मैं समझता हूं कि जो भी प्रस्ताव वहां से आये हैं उनके बनाने के सम्बन्ध में, हमने उनको स्वीकार किया है और मैं सदन की जानकारी के लिये इतना और निवेदन कर दूं कि जहां सारे पर्यटन विभाग के लिये

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के लिये २ करोड़ के ऐलोकेशन को घटा कर १ करोड़ १० लाख कर दिया गया है वहां हमने इस १० लाख रु० में जो कि इस काम के लिये रक्खा गया था जरा भी कमी नहीं की है ।

Shri C. R. Pattabhi Raman: . Considering the number of pilgrims coming to these parts from all over India, are attempts being made to have at least more dharmasalas on the way to Badri, Kedar and Gangotri?

Shri Raj Bahadur: I did not catch the question.

Mr. Speaker: Are attempts being made to have more dharmasalas, etc?

Shri Raj Bahadur: Exactly.

Shri Thirumala Rao: Has the Minister visited Bardinath once at least?

Shri Raj Bahadur: I have visited Badrinath once. Apart from that, keeping in view the large number of people coming from all parts of the country to Badrinath for *yatra*, we have provided log cabins. There is provision for the construction of rest houses also in the Kailas-Manasarowar route, at Darachula, Khela, Sirka, Jipti, Malpa, Garbyang, Gunji and Kala Pani, etc. There is provision of Rs. 2·72 lakhs in Part I of the Plan for the construction of rest houses at these places.

सेठ गोविन्द दास : क्या सरकार यह जानती है कि जहां तक यमनोतरी और गंगोतरी के रास्ते का सम्बन्ध है, वहां ठहरने के स्थानों के सिवा सड़कें भी बहुत खराब हैं । केवल डेढ़ डेढ़ दो दो फुट की चौड़ी सड़कें हैं, जिनके एक ओर ऊंचे पहाड़ हैं और दूसरे ओर नीचे खन्दक । मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार ने उत्तर प्रदेश की सरकार से इस सम्बन्ध में बात करके कोई योजना बनायी है ताकि ठहरने के स्थानों में और सड़कों का ठीक प्रबन्ध हो सके ?

Shri Raj Bahadur: Confronted with these complaints, I and another U.P. Minister undertook the trip and tried to attend to these complaints. We have already made a grant of about Rs. 35 lakhs for the improvement of certain Sections of the road to Badrinath. We have made another grant now of about Rs. 8 lakhs for the further improvement of certain other sections which happen to be very dangerous and difficult portions on the route. I think many of the difficult precipices and bunds of the route will be improved and the gradient of the road will also be improved.

सेठ गोविन्द दास. क्या गंगोतरी और यमनोतरी के सम्बन्ध में कुछ न होगा ?

Shri Raj Bahadur: I think so far as Gangotri and Yamunotri are concerned, we have not done much about that particular route. It is more difficut than the Badrinath route. I have not seen that.

श्री म० ला० वर्मा : क्या ठहरने के स्थानों के अलावा भोजनालयों का भी कोई इन्तिजाम किया जा रहा है ?

श्री राज बहादुर : भोजन की व्यवस्था तो दुकानदार करते हैं ।

सेठ गोविन्द दास : बहुत महंगा बेचते है ।

श्री राज बहादुर : जी हां, महंगा भी बेचते हैं और खराब भी, इस सम्बन्ध में मैंने उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री को अपनी रिपोर्ट भी दी है और कुछ सुझाव भी दिये हैं, और उन्होंने उत्तर दिया है कि वे हर एक बात पर अलग अलग ध्यान दे रहे हैं । और मैं आशा करता हूं कि वह इस बारे में शीघ्र व्यवस्था कर सकेंगे ।

श्री भक्त दर्शन : माननीय मन्त्री जी ने बतलाया कि उन्होंने विश्राम गृहों के लिये दस लाख रुपये की धनराशि रखी है । मैं जानना चाहता हूं कि क्या उनको विश्वास है कि उत्तर प्रदेश की सरकार इस सारी धनराशि का ठीक उपयोग कर सकेगी और सारा कार्य समय के अन्दर करवा सकेगी ? और

क्या तीसरी पंचवर्षीय योजना में इस काम के लिये और भी बड़ी धनराशि रखने पर विचार किया जा रहा है ?

श्री राज बहादुर : जहां तक हमारी चिन्ता का सम्बन्ध है वह इससे प्रकट है कि हमने इस अनुदान में कोई कमी नहीं की है । इसके अतिरिक्त जो भी सुझाव उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से आते हैं हम उनको मंजूर कर रहे हैं । लेकिन इस सम्बन्ध में माननीय सदस्य को यह भी ध्यान रखना चाहिये कि इन स्थानों में साल में केवल ६ महीने ही काम हो सकता है और ६ महीने बर्फ और पानी के कारण काम नहीं हो सकता ।

Shri Kamal Singh: Apart from the shortage of rest house accommodation on the route to Badrinath, is the hon. Minister aware that there is really a shortage of rest house accommodation in Badrinath itself and whether any steps have been taken to relieve that shortage?

Shri Raj Bahadur: We are very well aware that there is very acute shortage of rest houses. We are also aware that a large number of educated people go there, not only for pilgrimage but also for sight-seeing. Tourists go there for seeing the Himalayas and so on. That is why we are anxious to expedite the expansion and improvement of rest house accommodation on these ruotes as quickly as possible.

Mr. Speaker: He wants to know about Badrinath itself.

Shri Raj Bahadur: So far as the routes are concerned, the rest house accommodation is very insufficient and we are trying our best in collaboration with the U.P. Government to improve things. So far as Badrinath itself is concerned, the Badrinath town is administered by the Badrinath Temple Trust and the secretary looks after everything. The U.P. Government are very well aware of the conditions there and they will try to improve it; essentially it lies within their jurisdiction.

Export of Locomotives, Wagons and Coaches

+
*553. { **Shri Ajit Singh Sarhadi:**
Shrimati Parvathi Krishnan:
Shri Nagi Reddy:
Shri Warior: }

Will the Minister of **Railways** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 518 on the 17th August, 1959 and state:

(a) whether any avenue of export of locomotives, wagons and coaches has since been found to earn foreign exchange; and

(b) if so, where and to what extent?

The Deputy Minister of Railways (Shri Shahnawaz Khan): (a) Not so far.

(b) Does not arise.

Shri Ajit Singh Sarhadi: May I know what specific steps have been taken to find avenues of export?

Shri Shahnawaz Khan: We addressed a questionnaire to all our missions abroad. Also, a delegation of railway officers visited various countries in South-East Asia and they also tried to assess various avenues of export. But so far we have not been successful, although certain enquiries have been made by Thailand and Burma.

Shri Nagi Reddy: May I know whether any estimate has been made about the number of locomotives, wagons and coaches that will be available for export?

The Minister of Railways (Shri Jagjivan Ram): It is not a question of estimates being made. We have surplus of metre-gauge wagons and locomotives. If we can find markets, we are in a position to manufacture more and supply them to those markets.